1554 बजे

गृह मंत्री (श्री राजनाथ सिंह): महोदय, मैं अविश्वास प्रस्ताव के विरोध में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं। मैं अपनी बात की शुरूआत इसी संसद की एक घटना से करना चाहता हूं। आज से तीस वर्ष पहले इसी संसद में उस समय भारत के प्रधानमंत्री स्वर्गीय राजीव गांधी हुआ करते थे। राजीव गांधी जी ने उस समय भारतीय जनता पार्टी के लोगों की तरफ इशारा करते हुए कहा था कि हम दो और हमारे दो, क्योंकि उस समय संसद में भारतीय जनता पार्टी के केवल दो सदस्य थे। हम दो कहने का तात्पर्य उनका था कि आदरणीय अटल बिहारी वाजपेयी जी और आडवाणी जी और हमारे दो कहने का मतलब यह था कि संसद में भारतीय जनता पार्टी के दो सदस्य। आज 30-32 वर्षों के बाद जब इस संसद में मैं बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं, तो मैं देख रहा हूं कि इस समय स्पष्ट बहुमत हमारी भारतीय जनता पार्टी के साथ खड़ा है।

(1555/NK/SR)

जो लोग हमारे खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाने चाहते हैं, एक भी ऐसी राजनीतिक पार्टी नहीं है जो हमारे सामने बैठी है, उनके पास भी वह संख्या बल नहीं है कि वह सीधे अपने दमखम के पर हमारी पार्टी के विरुद्ध-अविश्वास प्रस्ताव ला सके, इसलिए कई राजनीतिक पार्टियों को मिला कर भारतीय जनता पार्टी के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाना पड़ा, आज ऐसे हालात हैं। यह कालचक्र का करिशमा है, इस कालचक्र के करिश्मे को समझना चाहिए। कभी कुछ भी हो सकता है, व्यक्ति के मन में कभी भी अहंकार नहीं आना चाहिए। आज वही भारतीय जनता पार्टी जो कभी संसद के दो सदस्यों की राजनीतिक पार्टी थी, आज देश के अधिकांश राज्यों में जनसामान्य का

विश्वास हासिल करती चली जा रही है। मैं यह भी कहना चाहता हूं, केरल जैसे राज्य के लिए यह माना जाता था कि भारतीय जनता पार्टी के लिए उस राज्य को भेद पाना अथवा कहीं पांव रखने की भी जगह बना पाना सर्वथा असंभव है। केरल के तिरूअनंतपुरम में जब लोकल बॉडी का चुनाव हुआ तो भारतीय जनता पार्टी ने वहां एक तिहाई से अधिक सदस्यों को लोकल बॉडी में पहुंचने में कामयाबी हासिल की।

1556 बजे (माननीय अध्यक्ष पीठासीन हुईं)

आज हम देखें, लद्दाख और कारगिल जैसे छोटे-छोटे स्थानों पर जहां काउंसिल हैं, आज से पच्चीस-तीस वर्ष पहले हम कल्पना भी नहीं कर सकते थे कि वहां पर भारतीय जनता पार्टी के लोगों को बहुमत मिलेगा। हमने काउन्सिल्स में भी विशेष स्थान प्राप्त किया है। ...(व्यवधान) त्रिपुरा में लंबे समय तक साम्यवादी सरकार थी। लोग यह कल्पना नहीं करते थे कि भारतीय जनता पार्टी त्रिपुरा में पैठ बना पाएगी। वहां दो-तिहाई बहुमत से हमने सरकार बनाने में कामयाबी हासिल की है।

...(व्यवधान)

मैं इतना ही कहना चाहता हूं कि अविश्वास प्रस्ताव लाने वाले हमारे मित्र हैं या राजनीतिक पार्टियां हैं, वे जनता के विश्वास के प्रस्तावों को पढ़ नहीं पा रहे हैं, समझ नहीं पा रहे हैं इसीलिए हमारी पार्टी के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव लाने की कोशिश कर रही हैं। पन्द्रह वर्षों के बाद किसी राजनीतिक पार्टी के विरुद्ध संसद में अविश्वास प्रस्ताव लाया गया है। पन्द्रह वर्ष पहले जब आदरणीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के नेतृत्व में सरकार थी, उस समय कांग्रेस पार्टी ने उनके विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव लाया था। पिछले दस वर्षों तक कांग्रेस के नेतृत्व में यूपीए की सरकार थी, लेकिन हम लोगों ने

यह कभी कोशिश नहीं की कि कांग्रेस नेतृत्व वाली यूपीए सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाया जाए, क्योंकि हम हकीकत को समझते थे कि कांग्रेस नेतृत्व की सरकार के पास स्पष्ट बहुमत है, उनके पास संख्या बल है। यदि सरकार चल रही है तो सरकार चलने देना चाहिए। सरकार को जनता का विश्वास प्राप्त है इसीलिए हम लोगों ने कभी भी डॉ मनमोहन सिंह जी के नेतृत्व वाली सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाने की कोशिश नहीं की। हमारा मानना है कि लोकतंत्र में विपक्ष की अहमियत होती है, विपक्ष का सम्मान किया जाना चाहिए। उसकी भावना की इज्जत करनी चाहिए। बहुत लोगों का विचार था कि अनावश्यक रूप से अविश्वास प्रस्ताव लाया जा रहा है, विपक्ष के लोग भी जानते हैं कि यह सरकार बहुमत सिद्ध करने में कामयाब होगी, हमारा अविश्वास प्रस्ताव गिर जाएगा। हम लोगों ने प्रधान मंत्री जी के साथ बैठ कर फैसला किया कि स्वस्थ लोकतांत्रिक व्यवस्था में विपक्ष की अहमियत होती है। यदि विपक्ष की इच्छा है कि अविश्वास प्रस्ताव लाया जाए तो हमें अविश्वास प्रस्ताव को स्वीकार करना चाहिए और इस पर चर्चा करनी चाहिए। आज संसद में अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा हो रही है। जहां तक हमारी सरकार का प्रश्न है। प्रतिपक्ष के लोग दिल से भले ही स्वीकार करें लेकिन प्रत्यक्ष रूप से जनसामान्य के सामने इस हकीकत को स्वीकार नहीं करेंगे। दुनिया का हर व्यक्ति इस सच्चाई को स्वीकार करता है कि विगत चार-साढ़े चार वर्षों से हमारी सरकार चल रही है। प्रधान मंत्री जी ने अंतर्राष्ट्रीय जगत में भारत की प्रतिष्ठा को बढ़ाने में कामयाबी हासिल की है। भारत की प्रतिष्ठा को ऊंचाई दिलाने में कामयाबी हासिल की है।

(1600/SK/UB)

उन्होंने भारत की प्रतिष्ठा को ऊंचाई दिलाने में कामयाबी हासिल की है। आज हम संसद में खड़े हैं, यदि हम पिछले 30 वर्षों के राजनैतिक इतिहास के पन्नों को पलटकर देखें, या तो 34 वर्ष पहले किसी राजनैतिक पार्टी को भारत की संसद में स्पष्ट बहुमत प्राप्त हुआ था या फिर अब चार वर्ष पहले किसी राजनैतिक पार्टी को इसी भारत की संसद में स्पष्ट बहुमत प्राप्त हुआ है। बीच में, किसी भी राजनैतिक पार्टी को संसद में कभी स्पष्ट बहुमत प्राप्त नहीं हुआ है। यह भी एक ऐतिहासिक पक्ष है, इस हकीकत को हमें समझना चाहिए कि कभी भी किसी गैर कांग्रेस राजनैतिक पार्टी को भारत की संसद में, आजाद भारत के इतिहास में कभी बहुमत प्राप्त नहीं हुआ। अगर पहली बार आजाद भारत के इतिहास में किसी गैर राजनैतिक कांग्रेस पार्टी को स्पष्ट बहुमत हासिल हुआ है तो भारतीय जनता पार्टी को हासिल हुआ। अविश्वास प्रस्ताव लाने वाले मित्रों को इस हकीकत को समझना चाहिए कि आप किस नेतृत्व के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव ला रहे हैं? जिस नेता पर सारे देश का विश्वास है? जिस देश के माननीय प्रधान मंत्री की अपील पर गिव इट अप योजना के अंतर्गत देश के हजारों, करोड़ों लोगों ने एलपीजी पर प्राप्त होने वाली सब्सिडी को पूरी तरह से छोड़ दिया, उस नेता के प्रति अविश्वास प्रस्ताव प्रस्तुत करने के लिए यहां बैठे हैं? इतना ही नहीं, सीनियर सिटिजन्स को एसी में चलने की सुविधा प्राप्त थी, इसमें लाखों की संख्या में ऐसे सीनियर सिटिजन्स हैं, जिन्होंने माननीय प्रधान मंत्री जी की अपील पर एसी की यात्रा को फोरगो कर दिया, परित्याग कर दिया। ऐसा नेता जिसकी अपील जनसामान्य में इतनी बड़ी है, उसके विरुद्ध आप यहां अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा करने के लिए एकत्रित हुए हैं?

यहां नोटबंदी की बात कही गई और बताया गया कि नोटबंदी के कारण भारत की अर्थव्यवस्था में कओस पैदा हो गया, कितनी बड़ी अराजकता पैदा हो गई और जनता को इसका खामियाजा भुगतना पड़ा। मैं इस देश की जनता को बधाई देना चाहता हूं, भले ही तात्कालिक स्तर पर जनता को कष्ट क्यों न उठाना पड़ा हो, लेकिन नोटबंदी के बाद देश के सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश में चुनाव हुआ, उत्तर प्रदेश की जनता ने नोटबंदी के फैसले के कारण थोड़ा-बहुत कष्ट उठाया था लेकिन उत्तर प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी को स्पष्ट बहुमत देकर हमारी सरकार बनवाई। …(व्यवधान)

1603 hours

(*At this stage, Shri Naramalli Sivaprasad and some other hon. Members came and stood near the Table.*)

इस संबंध में उत्तर प्रदेश की जनता ने माननीय प्रधान मंत्री जी के फैसले पर विश्वास व्यक्त किया। मैं कहना चाहता हूं कि इसे लाने वाले लोगों में जनता का विश्वास नहीं है। …(व्यवधान)

HON. SPEAKER: Please go to your seat. This is not the way. You have to listen. It is not only for Andhra Pradesh.

… (*Interruptions*)

HON. SPEAKER: Go to your seat.

… (*Interruptions*)

गृह मंत्री (श्री राजनाथ सिंह): माननीय अध्यक्ष जी, मैं इतना ही कहना चाहता हूं कि यहां जो अविश्वास प्रस्ताव लाया गया है, इसे लाने वाले लोगों पर जनता का विश्वास कितना है, सहज में ही इसका अनुमान लगा सकते हैं। …(व्यवधान)

1604 hours

(At this stage, Shri Naramalli Sivaprasad and some other hon. Members went back to their seats.)

मैं देख रहा हूं कि कई राजनीतिक दलों ने मिलकर हमारी सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाने की कोशिश की है। मैं जानता हूं कि जिन राजनीतिक दलों ने मिलकर हमारी सरकार के लिए अविश्वास प्रस्ताव लाने की कोशिश की है, उनका भी एक-दूसरे पर विश्वास नहीं है।

(1605/RPS/KMR)

अध्यक्ष महोदया, जहां तक नेतृत्व का सवाल है, जिस गठबंधन की चर्चा हो रही है, बहुत सी राजनीतिक पार्टियों के गठबंधन की चर्चा हो रही है, मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि यदि इस गठबंधन में नेतृत्व की चर्चा हो जाए तो आप मान लीजिए कि गई 'भैंस पानी में' जैसे हालात पैदा हो जाएंगे।…(व्यवधान) सारा का सारा गठबंधन पूरी तरह से टूट जाएगा। …(व्यवधान) मैं मानता हूं, आप सभी जानते हैं कि जिन लोगों द्वारा अविश्वास प्रस्ताव लाया गया है, उसको लेकर भी हमारे मित्रों के मन में पूरी तरह से विश्वास नहीं है। वे इस हकीकत को जानते हैं कि उनके द्वारा लाया गया यह अविश्वास प्रस्ताव इस सदन का विश्वास किसी भी सूरत में हासिल नहीं कर सकता।

अध्यक्ष महोदया, मैं दूसरे एक बहुत ही महत्वपूर्ण विषय की ओर सदन का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। मैंने देखा कि संसद के प्रमुख लोगों ने देश की अर्थव्यवस्था को लेकर अपनी चिन्ता व्यक्त की है। जो कुछ भी है, वह आइने की तरह बिल्कुल साफ है, यह बात मैं नहीं कह रहा हूं, दुनिया के अर्थशास्त्री ही नहीं कह रहे हैं, बल्कि इंटरनेशनल एजेंसीज भी इस सच्चाई को स्वीकार कर रही हैं कि इस समय विश्व में यदि किसी देश की फास्टेस्ट ग्रोइंग इकोनोमी है तो वह हमारे देश की है, भारत की है। जीडीपी की ग्रोथ रेट का जहां तक प्रश्न है, यूनाइटेड नेशन्स की एक एजेंसी ने कहा है और आईएमएफ ने भी कहा है कि इस सच्चाई से इन्कार नहीं किया जा सकता है कि भारत की इकोनोमी इतनी तेजी के साथ आगे बढ़ रही है कि 2019 और 2020 के इस फाइनेंशियल ईयर में जीडीपी ग्रोथ रेट 7.8 प्रतिशत से भी ऊपर जा सकती है। यह बात देश के बड़े-बड़े अर्थशास्त्रियों ने कही है और इंटरनेशनल एजेंसीज ने भी इस सच्चाई को कहा है।

हमारे कई मित्रों ने कहा कि चार वर्ष पहले हमारा देश दुनिया की टॉप 10 इकोनोमीज में था, 9वां नम्बर था। हमारा देश अर्थव्यवस्था की साइज के हिसाब से 9वें स्थान पर था। इन चार वर्षों में, पहले जो भारत 9वें स्थान पर था, आज विश्व की अर्थव्यवस्थाओं में वह छठें स्थान पर आकर खड़ा हो गया है। क्या इसके लिए प्रधानमंत्री जी और इस सरकार को बधाई नहीं दी जानी चाहिए?

अध्यक्ष महोदया, मैं साइंस का छात्र हूं और जो थोड़ी-बहुत इकोनोमिक्स जानता हूं, उसके आधार पर मैं यह बात कह सकता हूं कि इस हकीकत को भी नकारा नहीं जा सकता है कि जो हमारा भारत देश आज दुनिया की टॉप 6 इकोनोमीज में है, वर्ष

2030 आते-आते वह दुनिया की टॉप 3 इकोनोमीज में आकर खड़ा हो जाएगा। जहां तक इनवेस्टर्स का सवाल है, बहुत सारे मेजर रिफार्म्स हमारी सरकार ने किए हैं। बहुत से स्ट्रक्चरल रिफार्म्स और प्रोसीजरल रिफार्म्स भी हमारी सरकार ने किए हैं, जिनके परिणामस्वरूप मैं यह कह सकता हूं कि आज विश्व के इनवेस्टर्स के लिए दुनिया में यदि कोई मोस्ट अट्रैक्टिव देश है तो आपका और हमारा यह देश, भारत है। आज देश में ऐसे हालात बने हैं।

आज हमारे सामने कांग्रेस पार्टी के जो हमारे मित्र बैठे हैं, लम्बे समय तक आप लोगों ने सरकार चलाई है। मैं आपकी सरकार के ऊपर कोई टीका-टिप्पणी नहीं करना चाहता हूं, लेकिन इस सच्चाई को स्वीकार करना पड़ेगा। आंकड़े बोलते हैं, आंकड़ों को देखकर हकीकत समझी जा सकती है। क्या यह सच नहीं है कि आपकी पिछली सरकार लगातार दस वर्षों तक चली है। जीडीपी ग्रोथ रेट के बराबर रेट ऑफ इन्फ्लेशन हुआ करता था। आज क्या हो गया है। आज वे सारे इंडिकेटर्स बदल गए हैं। आज जीडीपी की ग्रोथ रेट ऊपर है और रेट ऑफ इन्फ्लेशन उससे कम है और कभी-कभी ऐसे भी हालात पैदा हो गए कि रेट ऑफ इन्फ्लेशन जीडीपी ग्रोथ रेट से हाफ पर था। मैं कह सकता हूं कि ऐसे बहुत सारे इकोनोमिक इंडिकेटर्स, जिनके आधार पर देश की अर्थव्यवस्था के संबंध में अनुमान लगाया जा सकता है, वे सारे इकोनोमिक इंडिकेटर्स इस समय पूरी तरह से हमारे नियंत्रण में हैं। यह बात मैं विश्वास के साथ कह सकता हूं। (1610/asa/gm)

सारी दुनिया के लिए इस समय कोई भी कंट्री एक प्राइड स्पॉट के रूप में इन्वेस्टर्स के लिए है तो वह भारत है, यह मैं विश्वास के साथ कहना चाहता हूं।

जहां तक फॉरेन डाइरेक्ट इन्वेस्टमेंट का प्रश्न है, हमारे एक नौजवान मित्र जो असम से हैं, श्री गौरव गोगोई जी यहां बैठे हुए हैं। मैं जानता हूं कि वह अध्ययन करते हैं और ये इकोनॉमिक्स के बारे में भी अच्छी तरह से जानते हैं।

जहां तक फॉरेन डाइरेक्ट इन्वेस्टमेंट का सवाल है, 150 बिलियन डॉलर इस समय हमारे देश में हुआ है। छोड़िए। यदि मैं चर्चा करूंगा तो बात बहुत आगे तक जाएगी।

माननीय अध्यक्ष जी, मैं यहां पर दो-तीन बातों की और चर्चा अर्थ-व्यवस्था की दृष्टि से करना चाहता हूं। जहां तक मैन्युफैक्चरिंग यूनिट्स का सवाल है, मोबाइल फैक्ट्री को ले लीजिए। चार वर्ष पहले मुश्किल इस देश में दो हुआ करती थीं। आज हालात ऐसे हो गए हैं कि हमारे देश में चार वर्ष के अंदर ही 120 से अधिक मोबाइल फैक्ट्रीज काम कर रही हैं। विश्व की सबसे बड़ी मोबाइल फैक्ट्री जो सैमसंग है, आपने देखा होगा। …(व्यवधान)

श्री धर्मेन्द्र यादव (बदायूँ): माननीय अध्यक्ष जी, यह समाजवादी सरकार की लाई हुई है। …(व्यवधान)

श्री राजनाथ सिंह : चलो मान लिया। समाजवादी पार्टी लेकर आई, मान लिया कांग्रेस पार्टी लाई, सब लाये, लेकिन आपने देखा कि वहां के प्रेज़ीडेंट को बुलाकर उसकी कैपेसिटी को एनहांस कराने का काम यदि किसी ने किया है तो वह हमारी सरकार ने किया है। इस सच्चाई से भी इंकार नहीं किया जा सकता।

ईज ऑफ डूइंग बिजनैस के मामले में मैं कहना चाहूंगा कि इंवैस्टर्स के लिए भारत अट्रैक्टिव डैस्टिनेशन क्यों बना है, क्योंकि ईज ऑफ डूइंग बिजनैस के मामले में भी हम तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। उसी तरीके से जिस तरह से इंफ्रास्ट्रक्चर सैक्टर में

धांधली हो रही थी और विशेष रूप से रीयल एस्टेट को भी पूरी तरह से कंट्रोल करने के लिए रीयल एस्टेट रेगुलेट्री ऑथोरिटी भी हम लोगों ने बनाई है। इतना ही नहीं, जो भगोड़ों के बारे में चर्चा होती थी और पहले भी यहां का धन लूटकर लोग बाहर चले जाते थे, जो फ्यूजिटिव इकोनॉमिक ऑफेंडर्स होते थे, उनके ऊपर भी प्रभावी कार्रवाई करने का बिल पहली बार यदि किसी सरकार ने पास कराने की कोशिश की है तो वह हमारी सरकार ने की है। अभी कल ही लोक सभा में पास हुआ है।

मैं याद दिलाना चाहता हूं कि हमारे 30 वर्ष पहले के प्रधान मंत्री स्वर्गीय श्री राजीव गांधी जी कहा करते थे कि जब हम 100 पैसे विकास के लिए भेजते हैं तो धरातल पर पहुंचते-पहुंचते 16 पैसे रह जाते हैं। …(व्यवधान) उन्होंने पहले 16 पैसे कहा था, बाद में 15 पैसे हुआ था। लेकिन आज हमारी सरकार ने डाइरेक्ट बैनेफिट ट्रांसफर स्कीम के माध्यम से जिन लोगों तक जो सब्सिडी जितनी पहुंचनी चाहिए, वह पूरी सब्सिडी लोगों तक पहुंचे, इसलिए डाइरेक्ट बैनेफिट ट्रांसफर स्कीम का जो सहारा लिया है, उसका भी पूरा लाभ मिल रहा है।

इतना ही नहीं, भारत की प्रतिष्ठा की बात मैंने कही है। मैं जानता हूं, कुछ लोगों को यह लगा होगा कि भारत की प्रतिष्ठा अन्तर्राष्ट्रीय जगत में बढ़ गई है, यह दावा मैं कैसे कर रहा हूं, मैंने तथ्य तो कई दिये हैं लेकिन एक तथ्य और देना चाहता हूं। मिसाइल टैक्नोलॉजी कंट्रोल रिजिम की बात मैं यहां पर करना चाहता हूं। चीन जो विश्व की इतनी बड़ी अर्थ-व्यवस्था है, चीन भी मिसाइल टैक्नोलॉजी कंट्रोल रिजिम का मैम्बर नहीं है, बल्कि चार वर्षों के अंदर इस मिसाइल टैक्नोलॉजी कंट्रोल रिजिम की मैम्बरशिप पाने में यदि किसी देश ने कामयाबी हासिल की है तो वह हमारे और आपके

देश भारत ने कामयाबी हासिल की है। इसीलिए भारत की सराहना की जानी चाहिए। लेकिन मैं यह समझता हूं कि हमारे विपक्ष के मित्र कुछ संशय की स्थिति में हैं। गठबंधन को लेकर भी संशय बना हुआ है, यदि गठबंधन हो गया तो आगे चलेगा या नहीं चलेगा, इसको लेकर भी संशय बना हुआ है। इसका नेता कौन होगा, इसको भी लेकर संशय बना हुआ है और नीतियों को लेकर तो संशय बना हुआ है।

(1615/RSG/RAJ)

लेकिन कभी-कभी वह कम्प्रमाइज कर लेते हैं। अपने मन को … (व्यवधान) मैं आ रहा हूं। … (व्यवधान) I am coming to that. … (*Interruptions*) आप बैठ जाइए, मैं आ रहा हूं। … (व्यवधान) आपको संशय … (व्यवधान) मैं आ रहा हूं। … (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया, मैं यह कहना चाहता हूं कि हमारे धर्मशास्त्रों में कहा गया है।… (व्यवधान)

HON. SPEAKER: Please take your seats. This is not the way.

… (*Interruptions*)

1615 hours

(*At this stage, Shri Thota Narasimham and some other hon. Members came and stood near the Table.*)

HON. SPEAKER: This is not the way. He is the Home Minister of India.

… (*Interruptions*)

श्री राजनाथ सिंह : मैं बोलूंगा।...(व्यवधान) आप ऐसा करेंगे, तो कैसे होगा।

...(व्यवधान)

HON. SPEAKER: He is the Home Minister of India. He is not the Minister only for Andhra Pradesh.

... (*Interruptions*)

HON. SPEAKER: This is not the way. I am sorry. He will have to speak for the whole of India. Please go back to your seats.

... (*Interruptions*)

HON. SPEAKER: Hon. Members, please go to your seats.

... (*Interruptions*)

HON. SPEAKER: Please listen to me for a minute. What is happening?

... (*Interruptions*)

HON. SPEAKER: Shri Thota Narasimham, please go back to your seat.

... (*Interruptions*)

HON. SPEAKER: All of you, please go to your seats.

... (*Interruptions*)

HON. SPEAKER: The House stands adjourned to meet again at 4.30 p.m.

1618 hours

The Lok Sabha then adjourned till thirty minutes past Sixteen of the Clock.

(1630/IND/RK)

1630 बजे

लोक सभा चार बजकर तीस मिनट पर पुनः समवेत् हुई।

(माननीय अध्यक्ष पीठासीन हुईं)

श्री राजनाथ सिंह : अध्यक्ष महोदया, मैं चर्चा कर रहा था कि इस समय गठबंधन को लेकर भी संशय है, नेता को लेकर भी संशय है, नीतियों को लेकर भी संशय है। नेताओं में कैसा संशय है, उसकी चर्चा मैं यहां करना चाहता हूं। नेताओं में किस प्रकार का संशय है, किस प्रकार का उनका अपने अंदर विश्वास है कि संसद के अंदर यहीं पर उन्होंने चिपको आंदोलन प्रारम्भ कर दिया। …(व्यवधान)

HON. SPEAKER: But, actually it was not proper to have done that.

…(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : हाउस में ऐसा नहीं होता है। यह हाउस के डेकोरम में नहीं है, ऑफ्टरआल पद की भी गरिमा होती है। उस समय मुझे भी अच्छा नहीं लगा।

…(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : गौरव बेटा, बैठ जाओ। अभी जिंदगी में बहुत कुछ समझना है।

…(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : पद की अपनी गरिमा होती है। जो कुछ भी हुआ, वह मुझे भी अच्छा नहीं लगा।

…(व्यवधान)

SHRI K.C. VENUGOPAL (ALAPPUZHA): What is wrong in that, Madam? … (*Interruptions*)

माननीय अध्यक्ष : ऐसा नहीं होना चाहिए, सभी लोगों को इसे ध्यान में रखना चाहिए। हाउस का डेकोरम होता है। वे प्रधान मंत्री हैं। At that time, he was sitting in the Prime Minister's seat. प्राइम मिनिस्टर की सीट पर बैठते हुए अपना एक डेकोरम होता है और हमारा भी डेकोरम होता है। संसद सदस्य के अपने व्यवहार का भी डेकोरम होता है। Everybody must keep this in mind. डेकोरम का आप सभी को भी पालन करना है, मुझे अकेले ही डेकोरम का पालन नहीं करना है।

…(<u>व्यवधान</u>)

माननीय अध्यक्ष : खड़गे जी, आप भी जीवन में ऐसा कभी नहीं करोगे।

…(<u>व्यवधान</u>)

माननीय अध्यक्ष : प्रधान मंत्री जी अपनी सीट पर बैठे थे, ऐसा नहीं करना चाहिए था। आपको अच्छा लगा होगा।

…(<u>व्यवधान</u>)

माननीय अध्यक्ष : खड़गे जी, आपने पूरा इंसीडेंट नहीं देखा होगा। आप पूरी बात समझ लीजिए। मैं किसी को गले लगाने के लिए मना नहीं करूंगी। मैं भी माँ हूं। मुझमें सब प्रकार के प्रेम के भाव हैं, लेकिन भाषण के बाद जिस तरीके से आना, यह ठीक नहीं है। प्रधान मंत्री अपनी सीट पर बैठे हैं। वे पद पर बैठे हैं, वे नरेन्द्र मोदी नहीं हैं, वे प्रधान मंत्री हैं।

…(<u>व्यवधान</u>)

माननीय अध्यक्ष : एक बात यह भी है कि वापस आ कर यहां आंख चमकाना, all that behaviour is not proper.

…(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : मैं आप सभी के लिए यह बात कह रही हूं। आप चिल्लाएं मत, मैं आप सभी के लिए यह बात कह रही हूं कि आप समझ लो, इस सदन की गरिमा हमें ही रखनी है। कोई बाहर से आकर सदन की गरिमा नहीं रखेगा। कोई बाहर से आ कर किसी के पद की गरिमा नहीं रखेगा। हमें सांसद होने के नाते अपनी तथा पद की गरिमा रखनी है। आप एक-दूसरे पर चिल्लाओ मत। कभी स्वयं से भी गलती हो सकती है। आप गंभीरता से बात को लिया करो। मैंने इतना कहा कि जिस तरीके से हुआ, वह ठीक नहीं है। आप एक-दूसरे को मिलते हैं तो क्या मैं कोई ऑब्जेक्शन उठाऊंगी। मैं भी चाहती हूं कि आप एक-दूसरे से प्रेम से रहो, लेकिन बाद में आकर जिस तरह से भाषण शुरू किया, वह क्या था।

…(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : खड़गे जी, राहुल जी मेरे दुश्मन नहीं हैं, वे मुझे बेटे जैसे ही लगते हैं। उन्हें बहुत जिंदगी यहां गुजारनी है और उन्हें बहुत नेतृत्व करना है, मगर उनके जो कंगूरे हैं, माँ के नाते उन्हें घिसना भी मेरा काम है। मैं स्पीकर की चेयर पर बैठी हूं। वे विपक्ष में हैं, इसलिए मैं ऐसा नहीं बोल रही हूं। हाउस का अपना भी डेकोरम होता है। मेरी भी समझ में नहीं आया कि यह क्या हो रहा है। उस समय मैंने सोचा कि यह क्या *… (Not recorded)* हो रहा है। फिर मैंने कहा भी कि यह ठीक नहीं है। मेरा यही कहना है कि आप कुछ मत बोलो और जो भावना है, उस भावना का आदर करना है।

…(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : अब आप कुछ मत बोलिए। आप वैसे नरेन्द्र मोदी जी के घर जाओ।

…(व्यवधान)

(1635/vb/rc)

गृह मंत्री (श्री राजनाथ सिंह): माननीय अध्यक्ष महोदया, बहुत-बहुत धन्यवाद। इस सदन से बाहर निकलने के बाद श्री खड़गे जी और हम भी, आपस में गले मिलने वाले हैं। …(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : मैं उसके खिलाफ नहीं हूँ, राजनाथ जी।

श्री राजनाथ सिंह: मैं यह चर्चा कर रहा हूँ कि हमारे धर्म-शास्त्रों में कहा गया है- "संशयात्मा: विनश्यति:।" यानी जो व्यक्ति संशय में होता है, जिसके अंदर विश्वास नहीं होता, अविश्वास होता है, उसकी आत्मा नष्ट हो जाती है, ऐसा हमारे यहाँ कहा गया है। हमारे यहाँ धर्म-शास्त्रों में यह भी कहा गया है, यह बात क्षणभर के लिए लोगों को दार्शनिक लग सकती है, लेकिन धर्म-शास्त्र की हकीक़त है, इसलिए इसे मैं यहाँ पर कहना चाहता हूँ कि जब आत्मा संशय के साथ घिर जाती है, तब मनुष्य के अंदर अहंकार पैदा होता है। प्रतिपक्ष के मेरे कुछ मित्रों के अंदर कुछ ऐसा ही मुझे देखने को मिला है कि कैसे किसी व्यक्ति अथवा किसी दल अथवा किसी संगठन में अहंकार पैदा हो जाता है। कांग्रेस के ही मेरे एक अभिन्न मित्र ने कहा कि यदि लोकतंत्र भारत में है, तो वह कांग्रेस के कारण है। यदि कांग्रेस नहीं चाहती, तो भारत में लोकतंत्र रहता ही नहीं। …(व्यवधान) मैं कहना चाहता हूँ कि यह स्टेटमेंट देने से पहले उन्हें कम से कम भारत के इतिहास को पढ़ लेना चाहिए था और जिन्होंने ऐसा कहा था, वे कर्नाटक के

ही रहने वाले हैं। कांग्रेस के ही नेता ने यह बात कही। मैं बहुत ही विनम्रतापूर्वक उनसे अनुरोध करना चाहता हूँ। आपने भले ही भारत का इतिहास न पढ़ा हो, लेकिन मैं कहना चाहूँगा कि कर्नाटक में भगवान बसवण्णा के 'अनुभव मंटप' के बारे में आपको जानकारी होगी। 12वीं शताब्दी में वह 'अनुभव मंटप' था, जो ब्रिटेन के 'मैग्ना कार्टा' से भी पुराना माना जाता है। उस 'अनुभव मंटप' में क्या होता था? उसमें चर्चा होती थी। जिस बात पर सहमति बनती थी, उसी आधार पर पूरा समाज आगे बढ़ता था। इस प्रकार की व्यवस्था थी।

माननीय अध्यक्ष : इतिहास सभी लोग नहीं पढ़ते हैं, इसलिए हम लोक सभा टी.वी. पर 'सुराज्य संहिता' कार्यक्रम लाने जा रहे हैं ताकि जानकारी मिल सके कि भारत में किस-किस प्रकार से राजनीति होती थी।

श्री राजनाथ सिंह : महोदया, यहाँ पर मैं चोल साम्राज्य की चर्चा भी करना चाहता हूँ क्योंकि आप भी इतिहास की जानकार हैं। चोल साम्राज्य की राजधानी तंजावुर थी, जो आज की तमिलनाडु है। चोल साम्राज्य में उस समय भी वहाँ पर छोटी-छोटी समितियों के चुनाव होते थे, ग्राम सभाओं के चुनाव होते थे, मतदान द्वारा ग्रामवासी अपने जनप्रतिनिधि को चुनते थे। यानी उस समय भी लोकतांत्रिक परम्परा थी।

भारत के पूर्व राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी जी जब राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के मुख्यालय गये थे, तो उन्होंने भी कहा था, उन्होंने 600 ई. पू. से चर्चा प्रारम्भ की थी और कहा था कि यदि कोई विश्व का प्राचीनतम राष्ट्र है, तो उस राष्ट्र का नाम 'भारत' है। 600 ई.पू. में ही वैशाली गणराज्य था, जिसे विश्व का प्राचीनतम गणराज्य माना

जाता है। वहाँ पर किस प्रकार से चुनाव होते थे, किस प्रकार से समितियाँ बनती थीं, वीथि बनती थी, इसके बारे में भी अच्छी जानकारी हमारे बहुत-से मित्रों को होगी।

इतना ही नहीं, भारत का जो भी लिखित इतिहास है, यदि उसे देखें, तो प्राय: राजवंश के लोग ही राजा बना करते थे। लेकिन, यदि पहली बार राजवंश से बाहर का कोई राजा बना है, तो उसका नाम है- चन्द्रगुप्त मौर्य।

(1640/PC/RU)

वे एक साधारण परिवार के थे। वे किसी बहुत ऊँची जाति के व्यक्ति नहीं थे। वे राजवंश के थे। ...(व्यवधान) अफगानिस्तान से लेकर बर्मा तक उनका बहुत लंबा-चौड़ा सामराज्य था। ...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया, चंद्रगुप्त ने एक वैदिक ब्राह्म्ण चाणक्य के मार्गदर्शन में सत्ता प्राप्त की थी, लेकिन उनका राज्याभिषेक जैन पद्धति से हुआ था। अपने जीवन के अंतिम क्षणों में वे राजपाठ छोड़कर कर्नाटक के श्रवणबेलगोला जाकर संन्यासी बन गए। मैं इसकी चर्चा इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि खड़गे जी यहाँ बैठे हैं।

माननीय अध्यक्ष : वे संन्यासी नहीं हैं।

श्री राजनाथ सिंह : पंडित जवाहरलाल नेहरू ने डिस्कवरी ऑफ इंडिया में भी इस बात को लिखा है कि किस प्रकार सेक्युलरिज़्म भारत के अतीत में भी भारत में रहा है। चूँकि इसका उल्लेख डिस्कवरी ऑफ इंडिया में पंडित जवाहरलाल नेहरू ने किया है, इसलिए मैं यहाँ इसकी चर्चा कर रहा हूँ। ...(व्यवधान) चंद्रगुप्त मौर्य गाँव में भेड़-बकरी चराने वाले व्यक्ति थे। भारत की सारी व्यवस्थाओं में ही लोकतंत्र रचा-बसा हुआ था, इसीलिए चंद्रगुप्त मौर्य जैसा भेड़-बकरी चराने वाला साधारण गाँव का व्यक्ति देश

का राजा बन गया। मैं समझता हूँ कि इस देश में चाय बेचने वाला व्यक्ति इस देश का प्रधान मंत्री बन गया। …(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया, भारत की अति प्राचीन और स्वस्थ लोकतांत्रिक व्यवस्था के कारण ऐसा हुआ है। भारत के लोगों की रग-रग में जो रचा-बसा है, यह उसके कारण हुआ है। …(व्यवधान) लोकतंत्र का सबसे पहले यदि कभी गला घोंटा गया है, तो वह आज से 43 साल पहले सन् 1975 में देश में आपातकाल लगाकर घोंटा गया। …(व्यवधान) महोदया, बातें तो बहुत सारी हैं, लेकिन मैं उन पर चर्चा नहीं करूँगा। चूँकि मेरे पास गृह मंत्रालय की जिम्मेदारी है, इसलिए मैं इस पर बहुत ज्यादा नहीं बोलूँगा लेकिन इसके बारे में कहते हुए मुझे संतोष हो रहा है और मैं उसकी अभिव्यक्ति भी यहाँ करना चाहता हूँ।

अध्यक्ष महोदया, नॉर्थ-ईस्ट में सुरक्षा की स्थिति में बेहतर सुधार हुआ है। प्रतिपक्ष में बैठे हुए हमारे मित्र भी इस सच्चाई को स्वीकार करेंगे। नॉर्थ-ईस्ट में रहने वाले श्री गौरव गोगोई इस बात को स्वीकार करेंगे। …(व्यवधान) पहले के कंपैरिज़न में इंसरजैंसी में 85 परसेंट की गिरावट आई है। …(व्यवधान) जहाँ तक नक्सलिज़्म का सवाल है, पहले सिक्योरिटी फोर्सेज़ की किलिंग्स ज़्यादा होती थीं और इंसरजैंट्स या जिन्हें नक्सलाइट्स भी कहते हैं, उनकी किलिंग्स बहुत कम होती थीं। आज यह सब कुछ रिवर्स हो चुका है। …(व्यवधान)

श्री गौरव गोगोई (कलियाबोर) : सर, आप नागा पीस अकॉर्ड पर बोल दीजिए। …(व्यवधान)

श्री राजनाथ सिंह : आप आश्वस्त रहिए। नागा इश्यू को लेकर जो फ्रेमवर्क अग्रीमेंट हुआ है, वह फ्रेमवर्क अग्रीमेंट निश्चित रूप से मैच्योर होगा, ऐसा मैं आपको विश्वास दिलाना चाहता हूँ। ...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया, सब से बड़ी बात यह है कि इन चार वर्षों के अंदर इस देश में कोई भी बड़ी आतंकवाद की घटना नहीं हो पाई है। मैं याद दिलाना चाहता हूँ कि चाहे दिल्ली, जयपुर, नागपुर, बंगलूरू और हैदराबाद जैसे बड़े-बड़े शहरों में जो बड़ी-बड़ी आतंकवादी वारदातें पहले हुई हैं, उन्हीं वारदातों की चपेट में यह सारा देश रहा है। ...(व्यवधान) मैं गुरदासपुर और पठानकोट की घटनाओं का उल्लेख करना चाहूँगा। ...(व्यवधान) यहाँ हमारे बहादुर सुरक्षा के जवानों ने आतंकवादियों को मौत के घाट उतार देने में कामयाबी हासिल की थी। पठानकोट जैसे बहुत बड़े स्ट्रैटेजिक एसेट को पूरी तरह से सुरक्षित बनाए रखने में भी उन्होंने कामयाबी हासिल की थी। ...(व्यवधान) मैं हमारी सेना के जवानों और सी.आर.पी.एफ एवं अन्य सुरक्षा बलों के जवाब तथा राज्य पुलिस के जवानों के साहस, शौर्य और क्षमता की यहाँ प्रशंसा करना चाहता हूँ।

अध्यक्ष महोदया, मैं सदन को यह भी बताना चाहता हूँ कि हम लोगों ने अपनी सेना, अपने सुरक्षा बलों और पुलिस के जवानों के हाथ बांधकर नहीं रखे हैं। इसी कारण सुरक्षा के मोर्चे पर आज इस प्रकार की कामयाबी हमें हासिल हो रही है।

(1645/MM/KSP)

महोदया, मॉब लिंचिंग की चर्चा यहां की गयी। कल भी मॉब लिंचिंग की चर्चा की गयी थी। आज एक वरिष्ठ नेता ने बोलते हुए मॉब लिंचिंग की चर्चा की। एक-दो हमारे मित्रों ने भी अपने भाषण में मॉब लिंचिंग की चर्चा की है। कल इस संबंध में मैं बोल चुका

हूं। मैंने कहा है कि ऐसी घटनाएं नहीं होनी चाहिए और इस पर पूरी कड़ाई से कार्रवाई होनी चाहिए, यह भी मैंने कहा है। केन्द्र सरकार से जिस भी प्रकार के सहयोग की जरूरत होगी, मॉब लिंचिंग को रोकने के लिए हम पूरा सहयोग देंगे, यह विश्वास भी मैं यहां देना चाहता हूं। राज्य सरकारों को भी मैं कहना चाहता हूं कि मॉब लिंचिंग को रोकने के लिए कठोर से कठोर कानून यदि अलग से बनाने की जरूरत है तो कानून बनाया जाए और मॉब लिंचिंग को रोका जाना चाहिए।

मॉब लिंचिंग पर बोलने वालों से मैं कहना चाहता हूं कि मॉब लिंचिंग की स्वतंत्र भारत में सबसे बड़ी घटना यदि कभी हुई है तो वह वर्ष 1984 में हुई है। इस देश के नेता द्वारा यह कहा जाना कि जब कोई बड़ा वृक्ष गिरता है तो धरती हिलती है। आज वे लोग मॉब लिंचिंग को लेकर हम लोगों को पाठ पढ़ा रहे हैं कि मॉब लिंचिंग को कैसे रोका जाए? सिख समुदाय के परिवारों की क्या हालत है, वह मैं देखता हूं, जब लोग मुझ से यहां मिलने आते हैं। मैं उनको यह भी यकीन दिलाना चाहता हूं कि हम उनको पूरी तरह से जस्टिस दिलाकर ही दम लेंगे। हमने एसआईटी बनायी है, जो अपना काम कर रही है और सिख समुदाय को हम इंसाफ दिलाकर रहेंगे, यह मैं विश्वास दिलाना चाहता हूं।

अध्यक्ष महोदया, कुछ नेता और सांसद कभी-कभी बोलते समय अनाप-शनाप बातें बोल देते हैं। कभी हिन्दू तालिबान की बात बोलते हैं, कभी हिन्दू पाकिस्तान की बात बोलते हैं। अध्यक्ष महोदया, वे भारत को कहां ले जाना चाहते हैं? वे भारत को क्या बनाना चाहते हैं? मैं उनसे कहना चाहता हूं कि उनके दौर-ए-हुकुमत में क्या हुआ था। केरल के एक अध्यापक जोसफ का हाथ सरेआम विद्यालय के बच्चों के सामने

काट दिया गया था, तब क्या उन्हें तालिबान याद नहीं आया था? इतना ही नहीं, कश्मीर में सैनिकों की हत्या पर जब जश्न मनाया जाता है, तब उन्हें तालिबान की याद नहीं आती है और यहां हिन्दू तालिबान की बात की जा रही है? संसद पर हमला करने वालों के प्रति जब सहानुभूति व्यक्त की गयी, उस समय तालिबान की याद नहीं आयी? आप भारत में क्या करना चाहते हैं? आज आप हिन्दू तालिबान की बात कर रहे हैं। मैं अपने विपक्ष के मित्रों को कहना चाहता हूं कि भारत की परम्परा को समझिए, न हो तो अतीत के पन्नों को पलटकर देखिए। भारत का कैसा इतिहास और परम्परा रही है? रावण को हमारे यहां शैतान माना गया, लेकिन जब वह मृत्यु शैय्या पर था तो मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम ने अपने छोटे भाई लक्ष्मण को कहा कि जाओ और रावण के पांव के पास बैठकर उनसे शिक्षा प्राप्त करो, ज्ञान प्राप्त करो। उनका सम्मान करने की परम्परा भारत में रही है। महाभारत के युद्ध में कौरवों का नाश पाण्डवों ने किया, लेकिन जिन कौरवों का नाश पाण्डवों ने किया, उन कौरवों का श्राद्ध कर्म करने का काम भी पाण्डवों ने ही किया, हमारे यहां यह सहनशीलता थी। इतना ही नहीं, मोहम्मद गौरी को कई बार पृथ्वीराज चौहान ने पराजित किया। लेकिन 25 बार मोहम्मद गौरी को माफ करने का काम भी उन्होंने ही किया था। मैं छत्रपति शिवाजी महाराज को याद करना चाहता हूं। कल्याण के किले पर कब्जा करने के बाद कल्याण के किलेदार की बहू गौहर बानो को सम्मान सहित वापस करने का काम यदि किसी ने किया तो छत्रपति शिवाजी महाराज ने किया। यह भारत की परम्परा है। मैं कहना चाहता हूं कि इस हकीकत को समझना चाहिए। भारत में हिन्दू, सिख, ईसाई, मुसलमान सभी मिल-जुलकर एक-दूसरे के साथ भाई-भाई की तरह रहते हैं। भारत में ऐसे हालात पैदा मत

करो। पाकिस्तान देश नहीं, जहनियत है। मैं याद दिलाना चाहता हूं कि वर्ष 1916 में लखनऊ में, जो मेरा निवार्चन क्षेत्र है, कांग्रेस का अधिवेशन हुआ था। उसी समय मुस्लिम लीग ने पृथक निर्वाचन क्षेत्र का प्रस्ताव रखा था।

(1650/BKS/SRG)

वहीं से पाकिस्तान की जहनियत ने काम करना प्रारंभ कर दिया और 1947 आते-आते भारत माता के दो टुकड़े हो गए, भारत बन गया और पाकिस्तान बन गया। क्या हम चाहते हैं, वह पाकिस्तान रूपी जहनियत आज भी भारत में जिंदा रहे, क्या हम ऐसी जहनियत को भारत में बनाकर रखना चाहते हैं? हम तालिबान हिंदू पाकिस्तान की बात करते हैं। जिस पाकिस्तान में आज अल्पसंख्यक निरंतर कम होते जा रहे हैं, समाप्त होते जा रहे हैं और जिस हिंदुस्तान में अल्पसंख्यक पूरी तरह से सही-सलामत हैं और फल-फूल रहे हैं, हम एक ऐसा हिंदुस्तान चाहते हैं या हम पाकिस्तान चाहते हैं? आप इसे कहां ले जाना चाहते हैं? इन्हें याद नहीं आता, पश्चिम बंगाल में ही एक मंत्री ने कह दिया कि हमारे संसदीय निर्वाचन क्षेत्र में मिनी पाकिस्तान है। क्या इसको कंडेम नहीं करना चाहिए था? भारत की धरती पर पाकिस्तान जिंदाबाद के नारे लगे, आई.एस.आई. के झंडे लगे, मैं समझता हूं कि सारी संसद को ही नहीं, बल्कि सारे देश द्वारा जुटकर इस प्रकार की जो ताकतें हैं, इनका मुकाबला किया जाना चाहिए और इन्हें मुंहतोड़ जवाब दिया जाना चाहिए, यही मैं निवेदन करना चाहता हूं।

अध्यक्ष महोदय, यहां पर गरीबों और किसानों की भी चर्चा हुई है। मैं माननीय प्रधान मंत्री जी को बधाई देना चाहता हूं कि किसानों के संबंध में उन्होंने बहुत महत्वपूर्ण फैसला किया है। कम से कम आज इस बात पर बहस हो सकती है कि उनकी आमदनी

2022 तक दोगुनी होगी कि नहीं होगी, यदि होगी तो कैसे होगी, क्या उपाय किए जाएंगे? इस पर तो बहस हो सकती है, लेकिन हमारे प्रधान मंत्री जी की नीयत और ईमान पर कोई सवालिया निशान नहीं लगा सकता। जब से आजादी मिली है, इस देश के किसान अपने हक के लिए तड़प रहे हैं, हाथ फैलाए तड़प रहे हैं, लेकिन उनकी चिंता आज हमारे प्रधान मंत्री जी कर रहे हैं। क्या कभी किसी ने सोचा था कि पैडी, खरीफ का मिनिमम सपोर्ट प्राइस एकाएक दो सौ रुपये प्रति क्विंटल पर जाएगा? ज्वार की कीमत 75 परसैंट बढ़ जाएगी? कई सारे आइटम्स की मैं यहां चर्चा नहीं करना चाहता। यह काम यदि कोई कर सकता है तो गरीब माता की कोख से पैदा हुआ कोई मां का लाल ही कर सकता है और वह लाल है, हमारे प्रधान मंत्री, श्री नरेन्द्र भाई मोदी। मैं कहना चाहता हूं कि बहुत सारे ऐसे लोग होते हैं, जो चांदी का चम्मच मुंह में लेकर पैदा होते हैं। वे किसानों की चिंता नहीं कर सकते। उनके लिए गरीबी ए मैटर ऑफ हियरिंग है, मैटर ऑफ सफरिंग उनके लिए नहीं हो सकता है।

जहां तक हमारी सरकार का प्रश्न है, राकेश सिंह जी, जो हमारे पहले वक्ता थे, उन्होंने बहुत विस्तारपूर्वक आयुष्मान योजना, सौभाग्य योजना, मुद्रा योजना आदि योजनाओं की जानकारी दी है। यहां कर्जदारी पर बहस हो रही थी। मैं याद दिलाना चाहता हूं कि मुद्रा योजना के अंतर्गत 12 करोड़ लोगों ने ऋण लिया, जिनमें से 3.25 करोड़ लोगों ने फर्स्ट टाइम आंत्रप्रिन्योर्स के रूप में काम करना प्रारंभ किया है। आंकड़े इस बात के गवाह हैं।

इतना ही नहीं जब हमारे सांसद, राकेश सिंह जी बोल रहे थे, उन्होंने बताया कि हमारे बहुत सारे भाजपा शासित ऐसे राज्य हैं, जिनका एग्रीकल्चर का ग्रोथ रेट 20

परसेंट तक है, इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। देश की एग्रीकल्चर का ग्रोथ रेट यदि 4 परसेंट से ऊपर पहुंच जाए तो हम मानते हैं कि हमने बहुत कुछ हासिल कर लिया। लेकिन एग्रीकल्चर का ग्रोथ रेट कैसे बढ़ाया जा सकता है, इसकी मिसाल हमारी कई राज्य सरकारों ने कायम की है।

पूर्व सैनिकों को वन रैंक, वन पेंशन देने का काम किसी दूसरी सरकार ने नहीं किया। तीस वर्षों से उनकी मांगे लम्बित थीं। इस काम को किया तो हमारी सरकार ने किया। उचित मूल्य, फसल बीमा योजना और यूरिया, यूरिया को लेकर लोग लाइन में खड़े होते थे, लाठीचार्ज होता था। यूरिया की कीमत भी कम की गई है और यूरिया लोगों को बहुत ही सहजतापूर्वक उपलब्ध भी हो पा रहा है।

मैं कहना चाहता हूं कि हमारी सरकार के लगभग सवा चार साल हो रहे हैं, लेकिन इतनी बात मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि हमारे प्रधान मंत्री जी ने सवा चार साल में सवा चार मिनट की भी छुट्टी कभी लेने की जहमत नहीं उठाई है, उन्होंने इतना निरंतर प्रयत्न किया है, अहर्निश अपनी कर्मठता का परिचय दिया है।

(1655/KKD/GG)

इसलिए मैं अविश्वास प्रस्ताव का विरोध करते हुए अपने मित्रों से कहना चाहूंगा कि - मेरी हिम्मत को सराहो, मेरे हमराही बनो। मैंने एक शमा जलाई है, हवाओं के खिलाफ, इस हकीकत को समझो। यही मैं कहना चाहता हूँ। ...(व्यवधान) मैं उस पर भी आ रहा हूँ। ...(व्यवधान)

HON. SPEAKER: Hon. Members, please take your seats. He is speaking about you, now.

… (*Interruptions*)

गृह मंत्री (श्री राजनाथ सिंह): तेलगू देशम पार्टी ने आंध्र प्रदेश को ले कर चिंता व्यक्त की है। बहुत सारे इश्युज़ हमारे सम्मानित सदस्य ने उठाए हैं और चन्द्र बाबू नायडु जी आज भी हम लोगों के मित्र हैं। पार्टी अलग हो सकती है, लेकिन आज भी चन्द्र बाबू नायडु जी के साथ हमारे मित्रता के ही रिश्ते हैं और रहेंगे, ये रिश्ते कभी टूटने वाले नहीं हैं। लेकिन आंध्र प्रदेश रीऑर्गनाइजेशन एक्ट, 2014 का जहां तक सवाल है, काफी हद तक इसे लागू किया गया है। कुछ चीजें शेष रह गई हैं। चूंकि यह दो राज्यों के विवाद का प्रश्न है, जब तक उसमें सहमति नहीं बनती है, तब तक उसे हल नहीं किया जा सकता है। इसलिए यह पड़ा हुआ है। …(व्यवधान)

HON. SPEAKER: Hon. Members, listen to him. He has not completed yet.

… (*Interruptions*)

श्री राजनाथ सिंह: महोदया, आंध्र प्रदेश का जब बंटवारा हुआ, तब हमने उसे एडिशनल टूरिस्ट पुलिस फोर्स और रिज़र्व बटालियन की भी मंजूरी दी। उस समय चार रिज़र्व बटालियन तेलंगाना के लिए मंजूर की गईं थी, लेकिन उस समय तेलंगाना को आठ दी गईं थी। स्टेट कैडर और आईएएस अफसरों की और ज्यादा सुविधा जल्द से जल्द देंगे। …(व्यवधान) मैं ए.पी. रीऑर्गनाइजेशन एक्ट की बात कर रहा हूँ। आप मेरी पूरी बात सुन लीजिए, बैठ जाइए, उसके बाद यदि आप एग्री न करें तो उसके बाद वॉक-आउट कीजिएगा, विरोध कीजिएगा, नारे लगाइएगा, सब कुछ मुझे मंजूर है, लोकतंत्र में सब चलता है।

महोदया, 1500 करोड़ रुपये आंध्र प्रदेश की नई राजधानी अमरावती के विकास के लिए हम लोगों ने दिए हैं, जिस पर माननीय सदस्य ने आपत्ति की है कि यह बहुत कम है। जबकि गुंटूर और विजयवाड़ा के लिए एक हजार करोड़ रुपये अलग से दिए गए हैं। कोलावरम् इरिगेशन प्रोजेक्ट के लिए केंद्र सरकार ने 7,158 करोड़ रुपये में से 6,764 करोड़ रुपये रिलीज़ कर दिए गए हैं और इस प्रोजेक्ट की कॉस्ट-रिवीजन पर भी इस समय हमारे यहां विचार चल रहा है। जल्द ही इस संबंध में फाइनल निर्णय किया जाएगा। बैकवर्ड एरिया डेवल्पमेंट के लिए 1050 करोड़ रुपये हमारी सरकार के द्वारा अलग से दिए गए हैं। इसके बावजूद और भी जरूरत होगी तो और करेंगे। चूंकि डिवीजन के समय रिसोर्सिस बंट गए थे, उसको समाप्त करने के लिए 4,117 करोड़ रुपये में से 3,979 करोड़ रुपये रिलीज़ किए गए। महोदया, आंध्र प्रदेश पर हमारी सरकार ने कितना ध्यान रखा है, यह इसी बात से पता चलता है कि 14वें वित्त आयोग ने 2015-20 तक 22,113 करोड़ रुपये रेवन्यु डेफिसिट ग्रांट के रूप में आंध्र प्रदेश को रिकमेंड किए थे। हमने 2015 और 2018 के बीच 15,969 करोड़ रुपये की धनराशि रिलीज़ कर दी है। हमने यह भी किया है। आंध्र प्रदेश को अलग से एक केंद्रीय विश्वविद्यालय, एक ट्राइबल विश्वविद्यालय, इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ पैट्रोलियम एण्ड एनर्जी, अमरावती के लिए 100 किलोमीटर लंबी रिंग रोड, एम्स, एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी के लिए अलग से 135 करोड़ रुपये रिलीज़ कर दिए गए हैं। इतना ही नहीं वाइजैक-चेन्नई इंडस्ट्रियल कॉरिडोर को भी मंजूरी दी गई है। यह सब आंध्र प्रदेश को स्पेशल असिस्टेंस के तहत दिया गया है। जब कि टीडीपी बराबर स्पेशल स्टेटस की मांग करती रही है, इस सवाल को ले कर बराबर अपना आग्रह बनाए हुए है कि इसमें

स्पेशल कैटेगरी स्टेटस दिया जाना चाहिए, जिसे एससीएफ कहते हैं। लेकिन उसमें कुछ मजबूरियां हैं। 14वें वित्त आयोग की चर्चा उन्होंने स्वयं ही की है। लेकिन आंध्र प्रदेश के विकास के लिए, जिस प्रकार के सहयोग की भी जरूरत होगी, हम लोग सहयोग देंगे। 14वें वित्त आयोग के अंतर्गत राज्यों को 32 प्रतिशत की जगह 42 प्रतिशत शेयर बढ़ा कर दिया जा रहा है। सन् 2015-20 तक आंध्र प्रदेश को केंद्र सरकार से 2,06,910 करोड़ रुपये की धनराशि प्राप्त होगी।

(1700/CS/RP)

यानी *इन बिटवीन 2015 टू 2020*. इतना ही नहीं, एलोकेशन होने के बावजूद सितम्बर 2016 में एक स्पेशल असिस्टेंस पैकेज भी दिया गया। इसके तहत 8,140 करोड़ रुपये एक्स्टर्नली ऐडिड प्रोजेक्ट्स को एप्रूव करके दिया गया है, जबकि 24,037 करोड़ रुपये का एक प्रोजेक्ट इस समय पाइपलाइन में है और उस पर भी जल्दी फैसला हो जायेगा।

महोदया, आन्ध्र प्रदेश सरकार को इन प्रोजेक्ट्स को जल्दी से जल्दी लागू करना चाहिए था। मैं समझता हूँ कि अब वे स्पेशल स्टेटस की बात की बहुत चर्चा न करके इन सब प्रोजेक्ट्स को लागू करें। जो भी असिस्टेंस प्राप्त हुआ है, उस आधार पर आन्ध्र प्रदेश का डेवलपमेंट करने की कोशिश करें। मैं इस सदन के माध्यम से आन्ध्र प्रदेश समेत पूरे देश की जनता को बताना चाहता हूँ कि 14वें वित्त आयोग ने स्पेशल कैटेगरी स्टेट्स और जनरल कैटेगरी स्टेट्स जैसे किसी डिस्टिंगक्शन का प्रावधान नहीं किया है। उसने ऐसा कोई प्रोविजन नहीं किया है कि कोई जनरल कैटेगरी स्टेट होगा या कोई स्पेशल कैटेगरी स्टेट होगा। 14वें वित्त आयोग का यह मानना था कि जो

रिसोर्स गैप राज्यों में होगा, उसे टैक्स डेवोल्यूशन के तहत भरा जायेगा। यदि तब भी यह गैप नहीं भरता है तो उस राज्य को पोस्ट डेवोल्यूशन रेवेन्यू डेफिसिट ग्रांट भी दी जायेगी। यह बहुत दो टूक शब्दों में कहा गया है। रिसोर्स गैप को भरने के लिए 02 जून, 2014 से 31 मार्च, 2015 तक एक स्पेशल ग्रांट के तहत 4,117 करोड़ रुपये की धनराशि मंजूर की गई और इसमें से 3,900 करोड़ रुपये की राशि दी जा चुकी है।

मैं अंत में इतना ही कहना चाहूँगा कि आन्ध्र प्रदेश इस देश का ही एक हिस्सा है। मैं जानता हूँ कि बंटवारे के बाद कुछ राज्य ऐसे होते हैं, जिन्हे सफर करना होता है। सेन्ट्रल गवर्नमेंट अपनी जिम्मेदारी को समझती है। आन्ध्र प्रदेश स्टेट के डेवलपमेंट के लिए जितनी भी मैक्सिमम असिस्टेंस की जरूरत होगी, जो भी सेन्ट्रल गवर्नमेंट कर सकती है, वह हम दिल खोलकर आन्ध्र प्रदेश के लिए करने को तैयार रहेंगे। यह मैं आपको पूरा विश्वास दिलाता हूँ। मैं इस अविश्वास प्रस्ताव का विरोध करते हुए अपनी बात समाप्त करता हूँ। धन्यवाद।

(इति)

HON. SPEAKER: Ram Mohan Naiduji is yet to speak. He can raise it at that time.

Now, Secretary General.

… (*Interruptions*)